पाठ- 3

अलंकार-

स्वरों की नियमानुसार चलन को अलंकार कहते हैं। अलंकार में कई कड़ियाँ होती हैं जो आपस में एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। प्रत्येक अलंकार में मध्य "सा से तार सा" तक आरोही वर्ण और तार सा के मध्य सा तक अवरोही वर्ण हुआ करता हैं। 'संगीत दर्पण ' के अनुसार इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई हैं – विशिष्ट वर्ण सदंभम लंकार प्रचश्रते' अथीत नियमित वर्ण-समूह को अलंकार कहते हैं। अलंकार का अवरोह , आरोह का ठीक उल्टा होता हैं।

जैसे -

आरोह - सरेग, रेगम, गमप, प ध नी, धनिसा

अवरोह - सानिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

इसी प्रकार अनेक अलंकार को पलटा भी कहते हैं।

अलंकार के दो भेद होते हैं-

1. शब्दालंकार

जहां अलंकारों के कारण ही भाषा में शब्दों के द्वारा कोई चमत्कार होता है उसे शब्दालंकार कहते हैं।

2. अर्थालंकार

जहां अलंकारों के कारण है भाषा के अर्थ में कोई चमत्कार आता है उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अलंकार -1

आरोह –

सा रे ग म प ध नी सो

अवरोह -

सो नी ध प म ग रे सा।